National Journal of Multidisciplinary Research and Development
www.multidisciplinaryjournal.org
ISSN: 2455-9040
Received: 07-10-2023, Accepted: 22-10-2023, Published: 07-11-2023
Volume 8, Issue 2, 2023, Page No. 177-178

सामाजिक माध्यमों का हिन्दी भाषा पर प्रभाव

अनन्त प्रकाश शुक्ल[1], **प्रभाकर सिंह**[2]
[1] शिक्षाशास्त्र विभाग, सैम ग्लोबल विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्यप्रदेश, भारत
[2] शोध निर्देशक, प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, सैम ग्लोबल विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्यप्रदेश, भारत

सारांश
प्रस्तुत शोध में चिंतन मनन से उत्पन्न भावों को वर्तमान समय में हमारी मातृभाषा हिन्दी पर सामाजिक माध्यमों के पड़ने वाले प्रभाव को विषयांकित करते हुए इसके विभिन्न स्वरूप एवं कारणों पर प्रकाश डाला गया हैं। वर्तमान समय में जिस प्रकार से सोशल मीडिया पर हिन्दी भाषा के प्रयोग करने वाले उपभोक्ताओं की संख्या बढ़ रही है निश्चय ही हम भारतीयों के लिए गौरव की बात है।

मुलशब्दः सोशल मीडिया, सामाजिक माध्यम, हिन्दी भाषा, फेसबुक, ट्यूटर

जब इण्टरनेट ने भारत में पांव फैलाना प्रारम्भ किया तो आशंका व्यक्त की गई थी कि कम्प्यूटर के कारण देश भर में फिर से अंग्रेजी का बोलबाला तेजी से बढ़ेगा परन्तु यह धारणा निर्मूल साबित हो गई और आज हिन्दी बेवसाइट तथा ब्लाग न केवल तेजी से चल रहे हैं बल्कि देश के साथ–साथ विदेशों के लोग भी इन पर सूचना का आदान प्रदान कर रहे हैं और इण्टरनेट हिन्दी भाषा को प्रचार करने का एक माध्यम साबित हो रहा है हिन्दी आज सोशल मीडिया में विविध रूपों में विकसित हो रही है। सोशल मीडिया में हिन्दी में वैश्विक मंच मिला है और इस कारण हिन्दी का परचम पूरे विश्व में लहरा रहा है। आज फेसबुक, ट्यूटर, व्हाट्सअप पर अंग्रेजी में लिखे गए पोस्ट या टिप्पणियों की भीड़ में हिन्दी भाषी पोस्ट या टिप्पणियों पर लोग अधिक आकर्षित हो रहे हैं।

सामाजिक माध्यमों में हिन्दी भाषा को वर्चस्व का प्रमुख कारण यह है कि हिन्दी भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त एवं वैज्ञानिक माध्यम है जो पोस्ट लिखी जाती है। उसके भावों को समझने में असुविधा नहीं होती है, पढ़ने वालों तक बात उसी भाव में पहुंचती है जिस भाव में लिखी जाती है सोशल मीडिया पर हिन्दी का ग्राफ दिन दूनी रात चौगुनी गति से बढ़ रहा है हिन्दी की सुगमता सरलता और समृद्धता का ये एक अनूठा प्रतीक है हिन्दी भाषा के इस सोशल मीडिया की ताकत ने सरकारो को उनके फैसलों नीतियों और व्यवहारों की ओर ध्यान आकर्षित किया है आज भी भारत में हिन्दी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं की अपेक्षा अंग्रेजी बोलने समझने और लिखने वालों की संख्या बहुत कम है। सोशल मीडिया के कारण ही लोग बड़े मंचों पर हिन्दी बोल और सुन रहे हैं जिससे इन मंचों पर सार्वजनिक विचार विमर्श करने की गुणवत्ता बढ़ी है, तथा लोगों का स्तर हिन्दी भाषा में पहले से बहुत अधिक बेहतर हुआ है। वर्तमान समय में हिन्दी भाषा यूट्यूब, फेसबुक, ट्यूटर पर खूब फल फूल रही है।

आंकड़े बताते है कि समाजिम माध्यमों पर हिन्दी का जादू सा चल गया हैं ऐसा भी कहा जाता है कि सामाजिक माध्यमों ने हिन्दी की ताकत बढ़ाई है। अप्रैल 2022 में आए एक अनुमान के अनुसार इण्टरनेट से जुड़ने वाले 90 प्रतिशत नए लोग हिन्दी या देशीभाषा जो कि भारतीय है का प्रयोग कर रहे हैं कुछ विचारक तो ये भी कह रहे है कि 19वीं शताब्दी में मैकाले ने भारत में जो अनर्थ किया उसे 21वीं शताब्दी में सामाजिक माध्यम उलट सकते हैं।

कुछ वर्ष पहले तक विश्व में 80 करोड़ लोग हिन्दी समझते, 50 करोड़ लोग बोलते और 35 करोड़ लोग लिखते थे लेकिन सोशल मीडिया पर हिन्दी के बढते इस्तेमाल के चलते अब अंग्रेजी उपयोगकर्ता में भी हिन्दी के प्रति आकर्षण बढ़ रहा है और इन ऑकड़ों में तेजी से वृद्धि हुई है वर्तमान समय में भारत विश्व का तीसरा सबसे बड़ा इण्टरनेट उपयोगकर्ता देश है। जिसका श्रेय हिन्दी भाषा को जाता है, दरअसल भारत की आबादी का एक बड़ा तबका हिन्दी भाषा के प्रति अधिक सजग है और उसे सोशल मीडिया से जोड़ने में हिन्दी का सबसे बड़ा योगदान है।

सोशल मीडिया पर हिन्दी भाषा के विस्तार की गति का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि सन् 2015 तक देश में सोशल मीडिया का इस्तेमाल करने वालों लोगों की संख्या 14.3 करोड़ रही जिसमें ग्रामीण क्षेत्रों में उपभोक्ताओं की संख्या पिछले एक साल में 100 प्रतिशत बढ़कर ढ़ाई करोड़ रही सबसे खास बात यह है कि न केवल उम्रदराज भारतीय बल्कि अंग्रेजी का अच्छा खासा ज्ञान रखने वाले युवा भी अब सामाजिक माध्यमों पर हिन्दी भाषा में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहे हैं।

पिछले कुछ सालों पर नजर दौड़ाएगे तो पता चलेगा कि फेसबुक हो या ट्यूटर इन पर शेयर की गई पोस्ट की भाषा या किसी तस्वीर का कैप्शन सिर्फ अंग्रेजी में हुआ करता था और कोई चाहकर भी सोशल मीडिया पर कोई पोस्ट हिन्दी में शेयर नहीं कर सकता था किसी दूसरी तरीके से हिन्दी में लिख्कर कापी पेस्ट करने पर फेसबुक और ट्यूटर पर वो फाण्ट बदलकर या तो बाक्स में बदल जाता था या कुछ और हो जाता या अजीब से चिन्ह उभर आते थे लेकिन सब सोशल मीडिया पर ज्यादा से ज्यादा हिन्दी लिखा और पढ़ा जा रहा है। ये बदलाव कुछ ही सालों के भीतर आए हैं। क्योंकि सोशल मीडिया के बदले हुए दौर में एक क्रांति की तरह उदय हुआ और तब उसकी भाषा अंग्रेजी ही थी ऐसे में यूजर को अपनी बात हिन्दी में कहने में झिझक महसूस होती थी वो टूटी–फूटी और गलत अंग्रेजी में अपनी बात कहने की कोशिश करता था लेकिन अब हिन्दी भाशा होने से ऐसा बिल्कुल नहीं है अब न तो झिझक है और न ही कोई शर्मिंदगी।

हिन्दी भाषा ने अब स्वाभाविक तौर पर सोशल मीडिया पर अपनी जगह बनाई है क्योंकि पहले ज्यादातर यूजर्स अंग्रेजी में टाइप करते थे ऐसे में लोगों को धीरे–धीरे रोमन में लिखकर पोस्ट करना पड़ता था इससे सामाजिक माध्यमों में कार्यरत लोगों को समझ में आया कि हिन्दी भाषा लिखने के विकल्प की बेहद जरूरत है यही वजह रही कि विदेशी मालिकाना वाले सोशल मीडिया को हिन्दी भाषी यूजर्स के लिए इस विकल्प को लाना पड़ा।

इसके बाद हिन्दी में एक बड़े बाजार का उदय सामाजिक माध्यमों में हो गया अब आप देख सकते है कि फेसबुक, ट्यूटर से लेकर गूगल और इंस्टाग्राम में भी हिन्दी में लिखा जा सकता है, पोस्ट किया जा सकता है और यूजर्स की तरफ से लिखने के लिए हिन्दी का चयन यिा जा सकता है।

सबसे खास बात यह है कि कोरोना काल में जूम, स्काइप और फेसबुक, इंस्टाग्राम पर किए गए लाइव सेशन और बेविनार भी हिन्दी में आयोजित होना शुरू हो गए फेसबुक पर तो ऐसे कई यवा लेखक और कवि है जिन्होंने हिन्दी में लिखकर अपनी एक अलग पहचान बनाई है। फेसबुक और ट्यूटर पर हिन्दी एक क्रांति के तौर पर उभकर सामने आयी हैं।

ऐसे में कहा जा सकता है कि सामाजिक माध्यमों से हिन्दी भाषा को निश्चित रूप से ताकत मिली है, सम्प्रेषण के लिहाज से हिन्दी भाषा की ताकत भविष्य में भी बढ़ती जाएगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. पत्रिका ए टू जेड लाइव शीर्षक आम आदमी की नई ताकत बना सोशल मीडिया– लेखक रवीन्द्र प्रभात।
2. फेसबुक सोशल मीडिया का चमत्कार– विपुल विनोद राजवीर सिंह, 2014 हिन्द पाकेट बुक्स लिमिटेड, नई दिल्ली।
3. फुच्स क्रिश्चियन 2014 सोशल मीडिया एक महत्वपूर्ण परिचय लंदन (SBN-9781-4462-5731-9)
4. अल–रहमी, वलीद मुगाहेद, ओथमान, मोहम्मद शहिजन 2013, विश्वविद्यालय के छात्रों के बीच अकादमिक प्रदर्शन पर सोशल मीडिया के उपयोग का प्रभावः एक पायलट अध्ययन सूचना प्रणाली अनुसंधान और नवाचार जर्नन 1–10
5. शिक्षा के तकनीकी परिप्रेक्ष्यः डॉ0 दीपक शुक्ला एवं डॉ0 प्रदीप कुमार, राखी प्रकाशन प्रा0 लिमिटेड (2018)
6. शैक्षिक तकनीकी एवं कम्प्यूटर अनुदेशनः जे0सी0 अग्रवाल एवं एस0पी0 कुलश्रेष्ठ 2016/16, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा।
7. शैक्षिक तकनीकी एवं सूचना सम्प्रेषण तकनीकीः डॉ0 राजीव मालवीय, शारदा पुस्तक भवन, यूनीवर्सिटी रोड, इलाहाबाद।
8. कम्प्यूटर शिक्षाः सतीश द्विवेदी एवं स्वतंत्र कुमार सोनी–2017, राखी प्रकाशन प्रा0 लि0 आगरा।
9. सोशल मीडिया की सम्भावनाएंः संचिता सिंह 2016, बुक ट्री पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।